Journals No. 47772)

AYUDH ISSN : 2321 : 2160

AYUDH

Volume-1

Special Issue on

भाषाशिक्षण और रोजगार के अवसर

Impact Factor : 3.1

February 2020

DR. [illegible]
HEAD
DEPARTMENT OF HINDI

DR. DINESH SHIRUDE
PRINCIPAL

MSG COLLEGE
MALEGAON CAMP
DIST. NASHIK, MAHARASHTRA

		56
	सहा. प्रा. शेवाळे गजाराम गमन	59
23.	भाषा शिक्षण और पत्रकारिता : एक विवेचन सहा.प्रा. साळवे सतीश मधुकर	63
24.	हिंदी भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएँ डॉ. संजय म. महेर	66
25.	हिंदी भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर डॉ. रफिद नजरूद्दीन तहसिल्दार	68
26.	भाषा शिक्षण और अनुवाद प्रा. सविता सिताराम तोडमल	70
27.	भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएँ डॉ.योगिता हिरे प्रा.डॉ.अनिता नेरे (भामरे)	72
28.	रोजगारोन्मुख हिंदी : चुनौतियाँ और संभावनाएँ प्रा. बालाजी सूर्यवंशी	75
29.	हिंदी भाषा और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया डॉ. जालिंदर इंगले	78
30.	भाषा शिक्षण की सामाजिक आवश्यकता डा. नागरत्ना के	81
31.	भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर डॉ. अनिल काळे	85
32.	भाषा शिक्षण और समाज माध्यम डॉ. भावना आर. केशवाला	88
33.	भाषा और पत्रकारिता डॉ. शशि साळुंखे	91
34.	"भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर" धृति ए. मोनाणी	94
35.	हिन्दी भाषा शिक्षण में रोजगार के अवसर काजल डी. सूंटी	96
36.	भाषा शिक्षण की सामाजिक अनिवार्यता सतीप एम. रावत	99
37.	भाषा शिक्षण और सिनेमा प्रा.दिपक शिवाजी आहिरे	101
38.	भाषा शिक्षण और पत्रकारिता लक्ष्मी बाबेलाल यादव	105
39.	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रा.डॉ. दिलीपकुमार रामराव गुंजरगे	108
40.	भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाए प्रा.कैलास काशिनाथ बच्छाव	110
41.	भाषा शिक्षण और रोजगार की संभावनाएँ प्रा. डॉ. जितेंद्र पाटील	113
42.	भाषा शिक्षण : रोजगार की उपलब्धियाँ प्रा. डॉ. गुरुदत्त जी. राजपूत	115
43.	हिंदी भाषा अनुवाद में रोजगार के अवसर प्रा.काळे मिनाक्षी बबनराव	121
44.	आधुनिक युग में हिंदी के क्षेत्र में रोजगार के असीम अवसर एवं संभावनाएं डॉ. रंजीत कुमार	125
45.	रोजगारोनमुख हिंदी भाषा साहित्य - शिक्षण- प्रशिक्षण का महत्व, चुनौतियां एवं समाधान डॉ. सुनीता साह	133
46.	भाषा शिक्षण और बाल सिनेमा ('तारे जमीन पर' के संदर्भ में) तपासे संदिप दामू	

ISSN : 2321-2160 Impact F. 3.1

भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएँ

डॉ.योगिता हिरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
एल. व्ही. एच. महाविद्यालय,
पंचवटी, नासिक

प्रा.डॉ.अनिता नेरे (भामरे)
शोध निर्देशिका
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय,
मालेगांव–कैम्प

प्रास्ताविक : वर्तमान युग में हिंदी ने राज्यभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा के साथ आंतरराष्ट्रीय भाषा के रुप में गौरवपूर्ण स्थान पूर्ण किया है । आज पूरे विश्व में सर्वाधिक भाषा बोलनेवाले जनसंख्या की दृष्टि से अंग्रेजी के बाद हिंदी द्वितीय क्रमांक पर आसीन है । आंतरराष्ट्रीय व्यापार, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान, पर्यटन हेतु हिंदी भाषा का प्रशिक्षण एवं तालीम प्राप्त करने के लिए विदेशों में महत्व दिया जा रहा है । विश्व के १५० से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्यापन विधिवत हो रहा है । वहाँ स्वतंत्र रुप से हिंदी विभाग कार्यरत है । राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रभाषा हिंदी हमारे गौरव, अस्मिता एवं राष्ट्रीय एकात्मकता का प्रतीक है तथा उसका महत्व अक्षुण्ण है । आम आदमी के जीवन गौरव, रोजगार पूरक तथा जीविका निर्वाह वृत्ति की दृष्टि से हिंदी भाषा का शिक्षण लक्षणीय एवं उल्लेखनीय है । मनुष्य जीवन के समृध्द एवं सुखद जीवन स्तर, उसकी आर्थिक सुस्थिरता, सुनिश्चित आजीविका की सुरक्षित मानसिकता, सामाजिक प्रतिष्ठा, सकारात्मक आशावाद एवं अध्येताओं तथा छात्रों को पहुँचाने योग्य उर्जा हिंदी भाषा के शिक्षण में अवश्य ही परिलक्षित है । वर्तमान में हिंदी की उपयोगिता पठन–पाठन और दर्शन–अध्यात्म तक सीमित न रहकर उसका जो व्यावसायिक स्वरुप उभरकर आया है, उसका उपयोग बाजार में अपनी पैठ बनाने के लिए आवश्यक सा हो गया है । हिंदी में निपुणता प्राप्त व्यक्ति न केवल रचनात्मक रुप से बल्कि व्यावसायिक रुप से भी सफल हो सकता है । इस प्रकार हिंदी भाषा तथा साहित्य के शिक्षण से संभावित रोजगार के विविध अवसर निम्नानुसार दृष्टिगोचर किए जा सकते हैं –

१) **दूरदर्शन :** दूरदर्शन पर हिंदी वृत्त निवेदन, सूत्र संचालन, साक्षात्कार विषयक लेखन एवं प्रस्तुतिकरण, हिंदी धारावाहिक मालिकाओं के लिए कथा, पटकथा, संवाद तथा गीत लेखन आदि ।

२) **चित्रपट :** हिंदी फिल्मों के लिए पटकथा, संवाद, गीत आदि का लेखन ।

३) **आकाशवाणी :** आकाशवाणी से प्रसारित हिंदी के विविध कार्यक्रमों में संहिता लेखन । नभोनाट्य, साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि का आलेखन । वृत्त संकलन, वृत्त निवेदन एवं उदघोषणा आदि प्रस्तुतिकरण ।

४) **विज्ञापन :** आकाशवाणी, दुरदर्शन, व्ही.डी.ओ., मोबाईल, चित्रपटगृह, अखबार, पोस्टर्स, मॅगेझिन, विज्ञापन संस्थाएँ आदि प्रसार माध्यमों के लिए हिंदी विज्ञापन की संहिता, संवाद, घोषवाक्य, गीत आदि का लेखन । साथ ही प्रस्तृति एवं मॉडेलिंग ।

५) **अनुवाद :** हिंदी तथा हिंदीतर भाषाओं में परस्पर साहित्य अनुवाद लेखन । अनुवादित साहित्य कृतियों तथा अन्य पुस्तकों को विभिन्न संस्थाओं के पुरस्कार एवं मानदेय का अर्जन । केंद्रीय कार्यालयों, अनुवाद ब्युरो, बैंको में अनुवाद कार्य बड़े पैमाने पर जारी है । इस क्षेत्र में रोजगार की अनेक संभावनाएँ हैं ।

६) **साहित्य सृजन :** हिंदी साहित्य लेखन एवं समीक्षा तथा नाट्य–चित्रपट आदि के रसग्रहण । साहित्य शोध ग्रंथ लेखन । दृक श्राव्य माध्यमों के लिए साहित्य निर्मिति । हास्य काव्य लेखन, हास्य कवि सम्मेलन एवं हिंदी कथाकथन द्वारा भी रोजगार प्राप्त किया जा रहा हैं ।

७) **प्रकाशन :** हिंदी साहित्य पाठ्यपुस्तकें, हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ आदि का मुद्रण, प्रकाशन, संपादन, मुद्रित–संशोधन आदि क्षेत्रों में उत्तम रोजगार उपलब्ध हैं ।

८) **केंद्रिय सेवाएँ :** डाक, तार, आकाशवाणी, दूरदर्शन, ई–मेल, इंटरनेट, दूरभाष आदि के माध्यमों तथा केंद्रीय सेवाएँ, रेल, सेनादल, केंद्रीय लोक सेवा संघ, स्टाफ सिलेक्शन समिति, राजभाषा कार्यन्वयन समिति, केंद्रीय मंत्रालय का गृह विभाग, केंद्रीय अनुवाद ब्युरो, राज्य तथा केंद्रीय हिंदी साहित्य, अकादमी, केंद्रीय हिंदी विदेशालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारतीय जीवन बिमा निगम, केंद्रीय शासन के विभिन्न निगम, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद जैसे केंद्र सरकार के निकाय, विदेशी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी का प्रशिक्षण आदि केंद्रीय सेवाओं में हिंदी भाषा शिक्षा को लेकर रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त हो सकते हैं ।

९) **विविध समारोह :** सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक हिंदी उपक्रमों एवं समारोहों के आयोजन तथा सूत्र संचालन में भी अच्छे रोजगार प्राप्त हो रहे हैं ।

१०) **राजनीतिक क्षेत्र :** अंग्रेजी से अनभिज्ञ नेता तथा मंत्रिजनों को हिंदी प्रशिक्षण तथा हिंदी सहायक, निजी सहायक, हिंदी दुभाषियों की नितांत आवश्यकता होती है । साथ ही सांसद, केंद्रीय मंत्री तथा राष्ट्रीय राजनीतिज्ञों को हिंदी प्रशिक्षक के रुप में हिंदी भाषा के ज्ञाता छात्रों को रोजगार प्राप्त हो रहा है ।

इस प्रकार वर्तमान युग में हिंदी भाषा को लेकर अनेक रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं । हिंदी केवल राजभाषा, राष्ट्रभाषा तक सीमित न रहकर वह अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है । वह 'बाजार' की प्रमुख भाषा होने के कारण रोजगार को उपलब्ध कराती है । हिंदी लिपिक, टंकक, संगणक चालक (डी.टी.पी.), लघु लिपिक तथा आशुलिपिक के पद पर कार्यस्थ होकर भी हिंदी में शिक्षा प्राप्त छात्र अर्थाजन कर सकता है । इसके अतिरिक्त रुपांतरकार, दुभाषिया, प्रवक्ता, हिंदी कार्यक्रम अधिकारी, जनसंपर्क अधिकारी, हिंदी निदेशक आदि के अलावा हिंदी पत्रकार, संपादक, स्तंभ लेखक, प्रकाशक, मुद्रक, वार्ताहर, वृत्त संकलक, समीक्षक, पटकथाकार, साक्षात्कार कर्ता, हिंदी ग्रंथपाल, ग्रंथ विक्रेता, ग्रंथ वितरक, हिंदी विज्ञापनकार, कॉपी रायटर, मॉडेलिंग, राष्ट्रीय उद्योजक, व्यापारी, प्रबंधक, एजंट आदि अनेक क्षेत्रों में हिंदी भाषा शिक्षा के कारण उत्तम, रोजगार और अर्थाजन प्राप्ति के सुअवसर प्राप्त हो रहे हैं ।

निष्कर्ष : भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी का ज्ञान, हिंदी की विशेषज्ञता एक विशाल जगत् से हमारा परिचय करवाती है । आज के बदलते हुए माहौल में, परिवर्तित समाज और मानव जीवन की स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा के बढ़ते महत्व को और उसके संभाव्य आवश्यक रुप को पहचानना आवश्यक है । 'बाजार' की दृष्टि से हिंदी के रोजगार बढ़ रहे हैं । उन्हें सुव्यवस्थित रुप में ढ़ालनें कौं, उनके प्रशिक्षण की आवश्यकता है । हिंदी संप्रेषण की भाषा है । संप्रेषण–भाषा और संप्रेषण–कला बाजार का प्राण है । देश–विदेश के मार्केट, उद्योग को जोड़नेवाला सेतु हिंदी भाषा का सेतु है । इस दृष्टि से भी हिंदी के कई रोजगार राष्ट्रीय, आंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध हो रहे हैं । असल में रोजगार की हिंदी में कमी नहीं हैं । कमी है – रोजगारपरक हिंदी की योग्यताओं की, तत्संबंधी ज्ञान और जानकारी की । इस कमी को पूरा करना सबकी अहम् जिम्मनेदारी है । क्योंकि हिंदी में रोजगार है और रोजगार के लिए हिंदी है ।

संदर्भ :–

१. प्रयोजन मूलक हिंदी : अधुनातम आयान, ले. डॉ. अंबादास देशमुख
२. रोजगाराभिमुख हिंदी : दिशाएँ एवं संभावनाएँ, डॉ. सुभाप तलेकर
३. प्रयोजनक हिंदी, डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी
४. हंस, हिंदी सिनेमा के सौ साल, फरवरी, २०१३.
५. आजकल, सिनेमा के सौ वर्ष, अक्तूबर, २०१२.